बाबा जी के माह की यात्रा

स्वामी कृपानन्द द्वारा लिखित

अगस्त में आरम्भ होकर पूरे सितम्बर माह में हम "श्रीगुरुमाई द्वारा मार्गदर्शन" का अभ्यास करते रहे हैं व उसका आनन्द लेते रहे हैं। अब, जब हम बाबा मुक्तानन्द की महासमाधि के माह, अक्टूबर में प्रवेश कर रहे हैं, मुझे आपको यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर आपके अध्ययन के लिए बाबा जी की सिखावनियों का एक संग्रह पोस्ट किया जाएगा। हर सप्ताह एक सिखावनी होगी [कुल मिलाकर चार सिखावनियाँ] व उसके साथ सिद्धयोग ध्यान-शिक्षकों द्वारा लिखित व्याख्याएँ भी होंगी। हर शिक्षक उस सिखावनी के विषय में अपना विशिष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे जिससे उस सिखावनी को अभ्यास में उतारने के लिए *आपको* सम्बल मिले।

विश्व के कुछ हिस्सों में, अक्टूबर के माह में शरद-ऋतु गा रही होती है। वर्ष का यह समय मुझे बहुत पसन्द है, विशेषकर न्यूयॉर्क शहर के बाहर, कैट्स्किल पहाड़ियों के बीच स्थित श्री मुक्तानन्द आश्रम के आस-पास के परिसर में। अक्टूबर में, वहाँ के मैदानों और परिदृश्यों में आकस्मिक व चित्ताकर्षक परिवर्तन होते हैं। हवा में ताज़गी होती है, और यह बड़ी स्फूर्तिदायक हो जाती है और प्रकाश की गुणवत्ता भी बदल जाती है—सूर्य की किरणें सीधे सिर पर नहीं लगतीं बल्कि तिरछी पड़ती हैं और वे किसी मेटल अथवा धातु जैसे हलके रंग की होती हैं। जहाँ भी देखो, आपको चारों ओर इस ऋतु के विशेष चमकीले रंग ही दिखते हैं—लाल, नारंगी व पीला। ये रंग मुझे बाबा जी के वस्त्रों के रंग का स्मरण कराते हैं। गुरुमाई चिद्विलासानन्द से मैंने सीखा है कि बाबा जी के माह के रूप में मई व अक्टूबर माह का सम्मान करना व इन महीनों के दौरान उत्सव मनाना—मई माह में बाबा जी का जन्मदिवस आता है और अक्टूबर माह बाबा जी की महासमाधि का माह है, वह समय जब वे परब्रह्म में लीन हो गए थे। फिर भी यह अक्टूबर का माह है जो मुझे हर मोड़ पर बाबा जी की विशेष याद दिलाता है। शरद-ऋतु में चमचमाते विभिन्न रंगों का प्रदर्शन, मेरे मन में बाबा जी की याद को ताज़ा कर देता हैं—कैसे वे अपने भगवे रेशमी वस्त्रों में, लम्बे-लम्बे डग भरते हुए तेज़ी-से चल रहे होते थे।

बाबा जी की महासमाधि, उस समय का सम्मान करना है जब बाबा जी अपनी भौतिक देह को त्यागकर सर्वव्यापी परब्रह्म में विलीन हो गए थे और समस्त प्राणियों के हृदय मे प्रविष्ट हो गए थे। यही कारण है कि भारतीय शास्त्र, इस आनन्दमय विलय को, आत्मा की इस मुक्ति को, एक सिद्ध महात्मा के प्रयाण को एक मंगलमय अवसर मानते हैं। यह आनन्द मनाने का समय है। यद्यपि, उन महात्मा की भौतिक अनुपस्थिति के विचार से शोक व दुःख की भावनाएँ कभी-कभी उभर सकती हैं,

फिर भी यह प्रकाशमय समझ व एहसास बना रहता है कि वे महात्मा छोड़कर कभी गए ही नहीं; उनका सत्त्व हमारे हृदय में जीवन्त है।

अक्टूबर १९८१ में, जब बाबा जी अपनी तीसरी विश्वयात्रा से गुरुदेव सिद्धपीठ लौटे, तब सिद्धयोग स्वामी के रूप में यह मेरा सद्भाग्य था कि मैं उनके साथ भारत आई और सेवा अर्पित करती रही।

२ अक्टूबर १९८२ को बाबा जी की महासमाधि की रात ग्यारह बजे के कुछ देर बाद मेरे कमरे में कोई आया। मैं सो रही थी किन्तु वास्तव में मुझे नींद नहीं आ रही थी; मुझे नहीं पता था कि मैं ठीक से सो क्यों नहीं पा रही हूँ। मुझे व मेरे पास के कमरों में रहने वालों को बाबा जी के कक्ष में पहुँचने के लिए कहा गया। जब मैं वहाँ पहुँची तो देखा कि बाबा जी पूर्ण पद्मासन में बैठे हुए हैं। यह स्पष्ट था कि वे महासमाधि ले चुके हैं।

मुझे याद है कि परिस्थिति की गम्भीरता को देखने व समझने पर अचानक ही मेरा पूरा संसार ही लुप्त हो गया, ऐसा लगा कि उसमें से प्रकाश बुझ गया है। किन्तु, वह पूर्णिमा की रात्रि थी और उस रात का चन्द्रमा सर्वाधिक उज्ज्वल था, वैसा चन्द्रमा मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

मैं देख रही थी—मानो वह किसी चलचित्र का कोई दृश्य हो—लोग बाबा जी के कमरे में आ रहे थे व जा रहे थे, अन्तिम दर्शन की तैयारियाँ कर रहे थे। ऐसा लग रहा था कि सब कुछ धीमी गति से चल रहा हो। मुझे भी इन तैयारियों में सहयोग करने के लिए कहा गया।

बीच में, कोई वस्तु लेने मैं अपने कमरे में गई। अचानक ही, मेरे अन्दर अब तक दबी सारी भावनाओं को बाहर निकलकर व्यक्त होने की राह मिल गई। मैं अचानक फूट-फूटकर रोने लगी। और मैंने स्वयं को रोका नहीं। मैं अपने बिस्तर पर बैठ गई और भावनाओं को निकलने दिया। अपने चेहरे पर मैं आँसुओं की गरमाहट महसूस कर रही थी। मैंने अपना सब कुछ खो दिया था।

इस गहरे अवसाद की स्थिति में, मेरे अन्दर एक प्रकाश जगमगा उठा और मैंने बाबा जी की आवाज़ सुनी। वह दिन के उजाले की तरह बिलकुल स्पष्ट थी। बाबा जी ने कहा : "ठीक है, कृपानन्द। सब कुछ ठीक हो जाएगा। मैं यहीं हूँ। मैं यहाँ *तुम्हारे साथ* ही हूँ।".

अपनी शोकाकुल स्थिति में, मैं चौंक गई। मैं अपने बिस्तर पर बैठी रही और उस *प्रकाश* को याद करने लगी। बाबा जी की आवाज़। बाबा जी के शब्द। बाबा जी के साथ व्यतीत किए अपने जीवन की घटनाएँ, उनकी सिखाई हर बात और उनके द्वारा मुझे प्रदान किया गया यह स्वर्णिम जीवन, सब कुछ मेरी आँखों के सामने आने लगा।

इससे मैं सोचने लगी : "हाँ बिलकुल। बिलकुल, बाबा जी, आप मेरे साथ *ही* हैं। मैं कैसे भूल सकती हूँ?" इस स्वीकृति के साथ मेरे अन्दर एक गहन शान्ति छा गई और मैं निश्चित रूप से यह समझ गई कि सब कुछ अवश्य ही ठीक हो जाएगा। बाबा जी ने कहा, और मैं जान गई।

बाबा जी, आपका धन्यवाद। आप कहीं नहीं गए! आप यहाँ थे और यहीं रहेंगे, मेरे हृदय-मन्दिर में जहाँ मैंने आपकी उपस्थिति को अनुभव किया है, तब से जब वर्ष १९७३ में मैंने पहली बार आपके दर्शन किए थे।

इस पुनःप्राप्त समझ व ऊर्जा के साथ, मैं बाबा जी के भक्तों के लिए, उनके अन्तिम दर्शन की तैयारियों में सहायता करने लौट गई।

बाबा जी की आवाज़ और शब्दों को सुनने से प्राप्त शक्ति के कारण मैं दूसरों की सहायता करने में सक्षम हुई। मैं जानती थी कि मुझे आगे कार्य करना है और मैंने अपने अन्दर एक नवीन संकल्प का अनुभव किया कि जब तक *मेरा* शरीर सक्षम रहेगा मैं सेवा अर्पित करती रहूँगी। बाबा जी एक प्रेरणा थे क्योंकि वे स्वयं इस धरा पर, अपने अन्तिम श्वास तक अपना कार्य करते रहे थे।

श्रीगुरुमाई के मार्गदर्शन में मेरी सिद्धयोग साधना चलती रही है और साथ ही बाबा जी की उपस्थिति पहले से भी अधिक शक्तिपूरित व दृढ़ हो गई है। वास्तव में, कभी-कभी जब मैं कुछ थकान महसूस करती हूँ या "धीमी पड़ जाती" हूँ, तो चमकीले केसरिया रंग के पटल में, बाबा जी मेरे स्वप्न में आते हैं, हँसते हैं व मेरी पीठ थपथपाते हैं। हर बार मैं एक नई उर्जा और खुशी व कृतज्ञता के भाव से भरकर जागती हूँ।

यद्यपि बाबा मुक्तानन्द अब अपने भौतिक शरीर में इस धरती पर नहीं हैं, मेरे लिए उनकी कृपा प्रबलता से उपस्थित है। संसार पर उनका प्रभाव विद्यमान है। और उनके मिशन को एक स्थायी धरोहर प्राप्त है। उनकी सिखावनियाँ, लोगों के अध्ययन व अभ्यास के लिए उपलब्ध हैं।

सिद्धयोग की प्रमुख सिखावनियों में से एक, जो वर्ष के इस समय मुझे विशेषरूप से याद आती है, वह यह है कि भौतिक देह को भले ही कुछ भी हो, आत्मा शाश्वत और अनश्वर है। शरीर की मृत्यु होने पर भी आत्मा बनी रहती है।

इस माह, २ अक्टूबर को हम बाबा मुक्तानन्द की सौर पुण्यतिथि मनाएँगे।

और अक्टूबर माह की पूर्णिमा को यानी २० अक्टूबर को हम बाबा मुक्तानन्द की चान्द्र पुण्यतिथि मनाएँगे।

पूरे माह, आप जहाँ कहीं भी रह रहे हों, बाबा जी के चिह्नों के प्रति सजग रहें। अकसर लोगों को विभिन्न अवसरों पर बाबा जी के अनेक रूपों में प्रकट होने का अनुभव होता है और वे ऐसे क्षणों पर ध्यान देने का आनन्द उठाते हैं।

और याद रखें : इस माह में हर सप्ताह आपको सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर बाबा जी की एक सिखावनी प्राप्त होगी। जब आप इन शब्दों का अध्ययन कर उन्हें अपने हृदय में उतारेंगे, और अपने लिए उनमें निहित सत्य का आनन्द लेंगे तो वे एक विशेष अर्थ के साथ जीवन्त हो उठेंगे, जो केवल आपके लिए होगा।

हम शुक्रवार को मिलेंगे जब हम अपने परमप्रिय बाबा जी की प्रथम सिखावनी को प्राप्त करेंगे!

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।